हे प्रकृतिजीत,हे शान्त शिखर, हे मानवीर,आपको शत–शत नमन

साकार के साचें में स्वरूप को ढालने वाली, आकार के मनोरथ को रूप देने वाली, निराकार की अभिव्यन्जना का प्रतिरूप बनने वाली, विधाता के विधान की गति को वेग देने वाली, यज्ञ के इरादों को आयाम देने वाली, वैराग्य की पराकाष्ठा को अन्तस्त में समाने वाली, सत्य की मशाल में ईमानदारी की ज्योति जगाने वाली, रोम–रोम में प्रभू प्रेम का राग भरने वाली, पवित्रता के पथ पर शुचिता के कदम रख हर मंजिल फतेह करने वाली, श्री श्री की हर श्रीमत को सिर माथे रख श्रेष्ठतम् शिखर पर आरूढ़ होने वाली, संकल्पों को मधुरता की मधुरिमा में भिगो शब्दों की तासीर में माधूर्य घोलने वाली, सिद्धान्तों की परिधि पर जीवन के हर प्रसंग को प्रेरक दर्पण बना इतिहास रचने वाली, त्याग एवं तपस्या के आधार पर साधना के सर्वोत्तम मुकाम पर आसीन हो जय घोष करने वाली, अनन्त की यात्रा में अहर्निशं परिव्राजक **आदरणीय दादी जी** हम सब भाई बहन आपकी इबारत के आगे नतमस्तक हो आपकी इबादत करते है,और आपको शतशत नमन....

जिस दौर में नारी सहस्त्र बंदिशों की वेदना में जीवन जीने के लिए मजबूर थी, उस काल में आपने सदियों की बेड़ियों को तोड़ न सिर्फ आध्यात्म के सूर्य के प्रकाश से अन्तःकरण के तिमिर को दूर किया, बल्कि सैकड़ों देशों के जन मानस में बैठे विकारों की हर कलुषित कालिमा को परिष्कृत कर उज्ज्वल बना कर नियति से तकदीर–ए–इकबाल कर दिया। आपने अपने पुरूषार्थ के मूलमंत्र से न सिर्फ हजारों वर्षों की मान्यताओं में भटकती विचारधारा को मंजिल का स्थायित्व दिया, बल्कि उर्जावान व्यक्तित्व से हर आयु में भी जीत का जज्बा पैदा कर दिया। किसी का पथानुगामी बनने के बजाए तपश्चर्या का उज्जवल पथ दिखा, विलासिता में डूबी पश्चिमी संस्कृति को तसव्वुफ का संदेश दे जश्न–ए–जिन्दगी के अभिप्राय की तदवीर दिखा दी, आधुनिकता के आवरण में खुशियों का पैकेज तलाशती आधुनिक मानसिकता में परमात्म प्यार का जो अनुग्रह किया है वा अकथनीय ही नहीं अकल्पनीय है। आपने अपने जीवन के 83 वर्ष भगवान के भागीरथ कार्य में भागीरथी बन 2500 वर्षों की मलिन मन की मलीनता का परिशोधन कर स्वर्णिम संसार के लिए आत्मा का जो कायाकल्प कर कंचन बना रही हैं वह काबिल–ए–तारीफ ही नहीं इबादत योग्य है।

दादी जी ये बहार–ए–चमन यज्ञ आपकी रहनुमाई एवं सेवा भावना से सदा ही गौरान्वित होता रहेगा, कि हमारे आश्रय में एक ऐसा देवदूत रहा जिसका निवेश बेनूर में भी आफताब का अक्श दिखा रहा गया, दादी जी ये आध्यात्म जगत तो क्या समस्त संसार आपकी अहर्निशं तामील का ऋणी है और सदा ही रहेगा। इस गुल्जार–ए–चमन में पल्लवित हर गुल भी अपने नसीब पर गर्व कर रहा है, कि उसे एक ऐसी बेनजीर शख्शियत का अनुग्रह प्राप्त हुआ, जो करिश्माई हूर ही नहीं खुदाई नूर भी था और नूर–ए–इलाही से ये इल्तिजा करता रहेगा कि आप यूँ ही सदा विकास की इबारत लिखती हर कल्प हमस ब के साथ लिखने आती रहें।

इनायत ये नूर–ए–इलाही की थी,

करामत ये जहान–ए–माली की थी
अमानत ये खुदा–ए–डाली की थी ,
सोचो तो सही.. 2 ... विधाता की ये कैसी अनमोल कृति थी ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी थी .....।।

विलायत की दहलीज पर, इबारतें लिखने वाली,
विनायक बन सिद्धियों की, विरासत देने वाली,
सोचो तो सही..2 ... परीक्षाओं के वक्त भी कैसी डेल्टा वृति थी ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी थी .....।।

कौड़ी बिना विदेश में, तामीर खड़े किये,
अंग्रेजी बिना अंग्रेजियत में, देव संस्कार भर दिये,
सोचो तो सही..2 ...बिना डिग्रियों के कैसी बेजोड उस्तानी थी ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी थी .....।।

पुरूषार्थ की रफ्तार में, बस इश्क था हकीकी,
अन्दाज योगियों के संग, जिनका सदा फकीरी,
सोचो तो सही...2 ... मौलाई मस्ती की क्या बेजोड़ हस्ती थी ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी थी ....।।

वाणी पर जिनकी सरस्वती, साक्षात चल रही थी ,
खुदाई तासीर में डूबे लफजों की, बरसात कर रही थी,

सोचो तो सही..2 ...परवरदिगार की कैसी अद्भुत कलाकृति थी ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी थी .....।।

वैराग की बुलन्दियाँ चढ़, चैतन्य कोहिनूर बन गई,
104 बसंत तक भी, खुदाई नूर गढ़ गयी ,
सोचो तो सही..2 ...बेनूर को कैसे हूर में बदलने की पृवति थी ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी थी.....।।

दिल के हर अल्फाज में, बस खुदाई इल्म था,
मन के हर आलेख में बस, मुरलियों की नज्म थी,
सोचो तो सही..2...रब की रहनुमाई में कैसी अजीम अभिव्यक्ति थी ।।
ये तो बस, ये तो बस .....अपनी दादी जानकी जी थी.....।।

ब्र. कु. सुमन
जानकीपुरम लखनऊ
28.03.20